Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

हिन्दी साहित्य में चुटकुला विधान

डॉ. लालचंद सिन्हा

सहा. प्राध्या. हिन्दी

शास. नवीन महा. कोन्टा , जिला सुकमा(छ.ग.)

चुटकुला सिद्धांत नहीं अपितु व्यवहार है। यह जन –मानस में भाषा के मूल रूप अर्थात् मौखिक भाषिक परम्परा के साथ विकसित हुआ है। इसके व्यवहार का अनुभव प्रत्येक मनुष्य के जीवन के साथ जुड़ा है। श्रोता समाज के होठों में बरबस मुस्कान ,हॅसी तथा दिल में गुदगुदी पैदा कर देना ठीक वैसा ही है जैसा प्रत्येक वर्ण का पुष्प अपने रस,रंग और गंध से सबको लुभाकर कुछ क्षण के लिए उनके कलुष और कठोर भावों का शमन करता है, ठीक वैसी ही प्रकृति चुटकुलों की होती है। यह रगों में जमें खून में हरकत पैदा करता है। चुटकुलेबाज जब अपनी वाणी या लेखनी द्वारा जब इस हास्य महास्त्र का प्रयोग करता है तो मानवीय प्रकृति की सहजता को समाप्त कर उसे जड़ बनाने वाली स्वार्थी मनोवृत्तियॉ तितर–बितर हो जाती है– भले ही कुछ समय के लिए ही सही।

सिगमंड फ्रायड ने वैदग्ध्य को दो प्रकारों में विभक्त किया है– पहला तटस्थ वैदग्ध्य (हार्मलेस विट) तथा दूसरा प्रवृति वैदग्ध्य (टेंडेंसी विट) । तटस्थ वैदग्ध्य का जिस दिशा में अग्रसर हुआ है वह हिंदी में चुटकुला आदि के प्रछन्न रूप से परिहास तक पहुॅचता मिलता है। संस्कृत भाषा हिंदी की जननी है। इसीलिए हिंदी साहित्य के किसी पक्ष पर विचार करते समय हमारा ध्यान परंपरागत संस्कृत साहित्य में उसका उत्स ढूंढने की ओर जाता है तो यह स्वाभाविक है। हमारे संस्कृत साहित्य में वक्रोक्ति ही काव्य का जीवन माना गया है। ' वक्रोक्ति काव्य जीवनम् ' । हास्य में अवश्यमेव कुछ न कुछ वक्रोक्ति रहती है।

चुटकुला अंत में शिखर में पहुॅच कर ही एक आकस्मिक विस्फोट करने में विश्वास रखता है और वहीं अपेक्षातर परिहासात्मक स्थिति भी उत्पन्न होती है। लोग बराबर उसके उस बिंदु (जिसे अंग्रेजी में पंचलाइन कहा जाता है।) की प्रतीक्षा में सब कुछ सुनते रहते हैं और बिना किसी अड़चन के शीघ्र ही उस बिंदु पर पहुॅचकर एक ऐसे मनोविनोद का अनुभव करते हैं जिसके चारों ओर एक मोटा परिहास का आवरण लिपटा होता है। स्थूल रूप से कहा जाए तो इस अभिव्यक्ति के स्थान पर वह तो मनोरंजन की शैली में अरूचि की भावनाओं पर प्रहार या चोट पहुॅचाने की अभिव्यक्ति है। सहज से सहज विषय–वस्तु जो साधारण व्यक्ति की नजरों में महत्त्वहीन है,चुटकुलेबाज की दृष्टि में आकर समाज को रास्ता दिखाने वाली विचार या फिर विशुद्ध मनोविनोद की आधार भूमि बन जाती है।

निश्चय ही लोक मानस में मौखिक भाषिक परंपरा में जनमने एवं पनपने वाला चुटकुला वर्तमान समाज में इतना लोकप्रिय और बहुप्रचलित हुआ है कि यह मानव जीवन के कोने में कोने में इसका विस्तार हुआ है। अबाल–वृद्ध,युवा अधेड़ सबके जीवन में मुहावरे और लोकोक्तियों की भांति वाचिक परंपरा का अंग बन चुका है। इसका विषय विस्तार इतना व्यापक है कि मानव जीवन का कोई भी हिस्सा इससे अछूता नहीं है। साहित्य ,राजनीति, व्यापार–वाणिज्य,विज्ञान और तकनीकी, शासन–प्रशासन और कानून,नीति–अनीति,श्लील–अश्लील,धर्म और आध्यात्म ,पाखंड और आडंबर ,जाति और संप्रदाय,रीति–रिवाज और परंपराओं आदि से लेकर घर–परिवार ,रिश्ते–नाते तथा आपसी व्यवहार एवं संबंधों आदि सभी मानवीय क्रिया कलापों में चुटकुलों का विस्तार है। मानवीय सामाजिक संबंधों में चुटकुला पति–पत्नी के बीच कहीं माधुर्य परिहास ,कहीं चुहलबाजी या छेड़खानी तो कहीं तिक्त वैदग्ध्य के रूप में उपस्थित होता है। इसी रूप में जीजा–साली या समधी– समधन के बीच में भी । मित्र मंडलियों की बैठक तब तक नीरस होती है जब तक उनके बीच हॅसी मजाक, ठट्ठा,खिल्ली या खिंचाई की उर्वर हास्यभूमि चुटकुला उपस्थित न हो। राजा–मंत्री, चोर–सिपाही,नेता और जनता, पक्ष– प्रतिपक्ष, नौकर–मालिक, रोगी–चिकित्सक, पुरोंहित–जजमान, कवि और श्रोता,छात्र–शिक्षक आदि संबंधों से उपजे चुटकुले जनमानस में हास्य

और लास्य के साथ प्रचलित हैं।चुटकुलों का प्रसंग ,विषय और स्तर आयु वर्ग और बौद्धिक संपदा के साथ साथ सामाजिक जीवन के स्वरूप स्तरानुकुल होते हैं और परिवर्तित भी होते रहते हैं। चुटकुलों का संसार मानव जीवन के सारे प्रसंगों को अभिव्यक्त करने में पूर्णतः सक्षम है।

वस्तुतः साहित्य जीवन की सौंदर्यमयी अभिव्यक्ति है,वह जीवन के कोमल और कठोर दोनों पक्षों की अभिव्यक्ति ही उसे प्राणवाण और भव्यतापूर्ण बनाते हैं। कला सब समय के लिए और विश्वात्मक होते हुए भी वह अपने समय और जन्म स्थान से विछिन्न नहीं हो सकती है। यद्यपि उत्तर आधुनिकता जो वैश्वीकरण का 'थिंक टैंक 'है साहित्य की पहले ही मृत्यु घोषित कर चुकी है क्योंकि उसकी दृष्टि में बाजार के लिए साहित्य की कोई उपयोगिता नहीं है तथापि मनुष्य के लिए आज भी साहित्य और कलाएँ अपरिहार्य है। वह चाहे जितना भौतिकतावादी या अर्थवादी हो जाए, अपने अंतर्जगत से अनासक्त नहीं हो सकता। इसलिए वैश्वीकरण के इस घमासान में साहित्य ,कला और संस्कृति को बचाए रखना मनुष्यता का प्राथमिक कर्त्तव्य है।

तटस्थ वैदग्ध्य(हार्मलेस विट) अर्थात् चुटकुलों के साहित्यिक महत्त्व को दृष्टिगत करके यदि विचार करें तो उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में 'कवि वचन सुधा' ,'हरिश्चंद्र मैगजीन','सार सुधानिधि',' हिन्दी प्रदीप' और आनन्द 'कादम्बिनी ' आदि साहित्यिक पत्रिकाओं में यह स्वप्नचित्र,गप्पाष्टक या हास्यचित्र के रूप में हिंदी संसार में आए। 'हिंदी प्रदीप' में उन्हें गप्पाष्टक की संज्ञा दी गई है। तत्कालीन साहित्य में कुछ हल्के फुल्के धरातल पर प्रस्तुत होने वाले हास्य भी लिखे गए जो चुटकुलों के सिवाय कुछ और नहीं है। भारतेंदु काल में हमें जो तटस्थ वैदग्ध्य के उदाहरण पत्रिकाओं में प्राप्त होते हैं वे रोज की बातों तथा विनोद या चुटकुलों के शीर्षकों के अंतर्गत ही हैं। ''उन चुटकुलों में जातीय मतभेद तथा अभारतीयों के प्रति घृणा और द्वेष के भाव से भरे पड़े हैं। इनका उद्देश्य विदेशियों की बदमाशी दिखलाना तथा उनके चारित्रिक दुर्बलता को प्रकट करना है। उदाहरण दृष्टव्य है –

एक मगरूर पादरी अपने दोस्तों में कहने लगे , 'हॉ मुझे कैसे गधों को बाज सुनाना पड़ा था ।' एक तेज तबीयत मेम साहिबा जो वहॉ मौजूद थीं, बोल उठी , अहा, तभी आप उन्हें बार– बार मेरे प्यारे भाइयों कह रहे थे।' '' 1

इसी प्रकार का एक और उदाहरण प्रस्तुत है– ''पं प्रतापनारायण मिश्र के साथ एक पादरी का जनसंवाद हो प्रचलित हो गया है। एक पादरी ने मिश्र जी को लज्जित करने के विचार से पूछा कि आप लोग गाय को माता कहते हैं तो बैल को पिता कहेंगे परंतु बैल कभी– कभी अभक्ष (मैला) भी खा लेता है। प्रतापनारायण मिश्र जी ने उत्तर दिया , ' साहब वह बैल ईसाई हो गया होगा। हमारे समाज में ऐसे बहुत से बैल हैं।'' 2

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि विदेशियों या उनके धर्म के विरूद्ध चुटकी लेने या चुभन उत्पन्न करने का प्रयास मिलता है । निश्चय ही उस काल में ईसाई मिशनरियों के द्वारा ईसाई मत फैलाये जाने का आभास मिलता है शायद जिसके विरोध हेतु ही इस काल के सजग चुटकुलेबाजों ने यह प्रयत्न किए हैं। यह सत्य है कि भारतेंदु काल में तीक्ष्ण वैदग्ध्य विभिन्न रूपों में विकसित होता रहा। अपने विकासक्रम में चुटकुलेबाजी का निश्चय ही सहारा लिया गया। इस बात की पुष्टि भारतेंदु काल के ग्रंथों के मुखपृष्ठ पर या आमुखों में – दिल बहलाने के बहाने के साधन के रूप में उल्लेखित होता है।

भारतेंदु मंडल के पं.प्रतापनारायण मिश्र , राधाचरण गोस्वामी, बालकृष्ण भट्ट , बालमुकुन्द गुप्त,लाला काशीनाथ खत्री,बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' ,ब्रजमोहन कूल प्रभृत समस्त साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में तटस्थ वैदग्ध्य के रूप में चुटकुले बाजी की सशक्त प्रयोग किया है। तत्कालीन स्थितियों के प्रति अत्यंत सजग– सचेत रहने वाले इन साहित्यकारों ने अंग्रेजी राज्य की लूट–खसोट एवं आर्थिक शोषण और व्याप्त अंधेरगर्दी तथा समाज में तद्जनित विभिन्न विकृतिजन्य भेदभावपूर्ण जाति व्यवस्था, उभरते पाखंडों –विडंबनाओं, चारित्रिक पतन, स्वार्थपरता एवं खुशामदखोरी का नग्नता को उघाड़नें में तीक्ष्ण और पैन व्यंग्यात्मक चुटकुलों का शक्ति साधन के रूप में प्रयोग

किये है। पाखंडी एवं लोलुप व्यक्तियों के प्रति तिरस्कार और घृणा का वातावरण निर्मित कर प्रहार करने के लिए तत्कालीन साहित्यकार श्री राधाचरण गोस्वामी जी ने चुटकुलेबाजी का प्रयोग किया है –

''गुनी – माता मैं गिनवाऊँ ?एक माता,दूसरी सास,तीसरी लुगाई।

''धूधू – अबे क्या बके हैं ?

''गुनी – सुन तो ले चौथी रंडी, पॉचवी विरागिनी,

''धूधू – हत्तेरो बुरा होय , ये सब तरी मॉ होगी ।

''गुनी – अबे लुगाई सबकी मॉ ऐसे कि बेटा जो होय है सो पिता को ही अंश होय है, रंडी मॉ ऐसे कि वाके घर सबके पिता जाय हैं ।

'' अब बता तेरी कि तेरी मॉ कौन हैं ? इनमें से ?....'' 3

बीसवीं सदी के प्रारंभिक दशक में आभास होता है कि मूर्धन्य साहित्यकार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके समकाल के साहित्यकारों की रचनाओं में परिहास या चुटकुलों के माध्यम से व्यंग्यात्मक प्रवृत्तियों का विकास हो रहा था । यद्यपि यह भी सही है कि विकसित होते चुटकुलों या परिहास के सैद्धांतिक पक्ष के संदर्भ में उन साहित्यकारों को कितनी जानकारी थी कुछ कहा नहीं जा सकता किंतु इनकी दिशा मूल्य परक जीवन के विरोधी तत्त्वों विरूद्ध प्रहार करना केंद्र में रहा है। निम्नांकित उद्धरण दृष्टव्य है –

'' एक राजा की सभा में इस पर बातचीत हो रही थी कि कौन बाजा सबसे अच्छा होता है। किसी ने वीणा ,किसी ने सितार, किसी ने मृदंग ,किसी ने जलतरंग.....। वहॉ एक देहाती कवि भी बैठे थे,उनसे जब पूछा गया कि '' कवीश्वर , आपको कौन–सा बाजा पसंद है ? तब बहुत कहने सुनने पर उसने धीरे से कहा , जांता (आटा पीसने की चक्की) ।'' 4

चुटकुलों में पैनापन आने लगा और आगे चलकर व्यंग्यात्मक ढॉचे मे शैनः शैनः ढलने लगा। एक उदाहरण प्रस्तुत है – ''एक सुधारक सिरोमणि लड़के के पिता से कहने लगे कि जब तक लड़के को ज्ञान न हो, तब तक उसका विवाह न कीजियेगा। पिता ने उत्तर दिया, ज्ञान होने पर भी क्या कोई विवाह करता है ?''

यह विकास तत्कालीन पत्रिकाओं में मनोविनोद के अंतर्गत आनेवाली सामग्री में मिलेगा ,जिसमें चुटकुलों की अधिकता दिखाई देती है। द्विवेदी युग के प्रतिष्ठित पत्र ' भारत जीवन 'में तीव्र वैदग्ध्य की ओर विकासमान चुटकुलों का अभाव नहीं था। मानव जीवन से जुड़े प्रत्येक प्रसंगों की ओर इस युग के साहित्यिक चुटकुलेबाजों की दृष्टि गई है। एक चुटकुला प्रस्तुत है –

''किसी ने कैदी से पूछा –' क्यों जी तुम किस अपराध पर कैदखाने आए ?कैदी बोला – ' मैंने रस्सी एक टुकड़ा जमीन से उठा लिया था। 'सवाल करने वाले ने आश्चर्य से कहा, 'क्या इसी मामूली बात के लिए तुम कैदखाने भेज दिए गए ?' कैदी ने कहा,'उस रस्सी के दूसरे सिरे पर एक गैया बॅधी थी। '' 5

इस युग की प्रसिद्ध पत्र ' मतवाला ' – जोकि अपनी व्यंग्यात्मक प्रवृत्ति का केंद्र था। उसमें चुटकुले आदि शीर्षकों के अंतर्गत तीक्ष्ण वैदग्ध्य का विस्तार व्यापक स्तर पर हुआ है। उदाहरण अवलोकनीय है –

''जज – जूरियों ने तुम्हें दोषी करार दिया है , अब तुम किसी तरह नहीं बच सकते ।

''अपराधी – हुजूर आप तो समझदार आदमी हैं। क्या आप भी उन बेवकूफों के कहे में आ जाऍगे।'' 6

तद्युगीन साहित्यिक एक दूसरा चुटकुला प्रस्तुत है – ''एक महिला एक कुत्ते को लेकर बस में चढ़ी। बस कंडक्टर ने बड़े विनीत भाव से उसे रोका,लेकिन वह रूकी नहीं, बस में चढ़ ही गई। बस में चढ़कर त्योंरियॉ बदलकर वह बोली – 'मैं पूरी सीट का किराया दूँगी।तब भी तुम्हें ऐतराज होगा?' कंडक्टर ने तुरंत ही कहा, जी, नहीं होगा। लेकिन कुत्ते से इतना कह दीजिए कि वह भी अन्य यात्रियों की तरह पैर लटकाकर बैठे।''7

समाज फैले वैयक्ति , सामाजिक और बौद्धिक दंभ का दमन का करने के लिए युगीन साहित्यकारों ने चुभते चुटकलों का संघातिक प्रयोग किए हैं। दंभ का दमन करते हुए आचार्य द्विवेदी जी के तीक्ष्ण वैदग्ध्य का साक्षात्कार कीजिए –

'.... आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, सायंकाल नियमित टहलने जाया करते थे। ... एक दिन रास्ते में दर्शनशास्त्र के एक प्रोफेसर मिल गए, जो अपने किसी काम के लिए आचार्य जी के पास आ रहे थे। उन्होंने अभिवादन नहीं किया और बस द्विवेदी जी के साथ हो लिए। कुछ दूर चलकर प्रोफेसर साहब कहने लगे, ' द्विवेदीजी मैं तो किसी के पैर नहीं छूता हूँ।' आचार्य द्विवेदी ने छूटते ही उत्तर दिया, ' बड़ा अच्छा करते हो। मेरे तो आए दिन ऐसे ऐसे लोग पैर छू लेते हैं कि मुझे बार बार नहाना पड़ता है। ''7–1 वही

ऐसा ही एक और उदाहरण प्रस्तुत है –''एक बार स्वामी विवकानंद, कुछ लोगों के साथ धार्मिक चर्चा कर रहे थे , तभी जयपुर के विख्यात पण्डित सूर्यनारायण पधारे। बातचीत के सिलसिले में उन्होंने कहा– ' मैं एक वेदांती हूँ और अवतारी पुरूषों की विशेष आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास नहीं रखता। पौराणिक अवतारों में भी मेरा विश्वास नहीं है। मैं तो यही मानता हूँ कि हम ब्रह्म हैं, मुझमें और अवतार में भला क्या अंतर ह ै?' स्वामी जी ने तुरंत उत्तर दिया – ' बात सत्य है, परंतु हिंदू लोग मत्स्य, कच्छप और वराह को भी अवतार मानते हैं,बता सकते हैं आप इनमें से कौन हैं ?'' 8

'' सम्मेलन की समाप्ति पर जब माखनलाल जी ट्रेन में बैठे थे, तो एक साहित्यिक आए और हाथ जोड़कर बोले, 'महाराज, हम तो अवधवासी हैं। आज्ञा दीजिए, लंका विजय के लिए कब आएँ? चतुर्वेदीजी बोले –' आपका आगमन शिरोधार्य है। परंतु पहले अपनी सीता का हरण तो कर लेने दीजिए।' '

10

तीक्ष्ण वैदग्ध्य का जहॉ तक एक व्यापक परिवेश तक लाने की बात है नाटककार जयशंकर प्रसाद के तीक्ष्ण परिहास लेखन में विशिष्ट शक्ति का परिचायक है। प्रसादजी के विकसित तटस्थ वैदग्ध्य जिसे हम परिहास या चुटकुला भी कह सकते हैं कि उनके परिहास या चुटकुलों तथा तीक्ष्ण वैदग्ध्य को एक वांछित शक्ति प्राप्त हुई। एक उद्धरण दृष्टव्य है –

'' धातुसेन – सुना है सम्राट स्त्री की मन्त्रणा बड़ी अनुकूल और उपयोगी होती है।....एक स्त्री को मंत्री आप भी बना लें। बड़े बड़े दाढ़ी मूछवाले मंत्रियों के बदले उसकी एकांत मंत्रणा कल्याणकारी होगी।

''कुमार– लेकिन पृथ्वीसेन तो मानते ही नहीं।

''धातुसेन – तब मेरी सम्मति से वे ही कुछ दिनों के लिए स्त्री हो जाएँ,क्यों कुमार मात्य जी?

''कुमार ' पर तुम तो स्त्री नहीं हो जो तुम्हारी सम्मति मान लूँ।'' 11

इस काल में उपन्यास साहित्य में यत्र तत्र मिलने वाले चुटीले व्यंग्य के अंश जीवन की असंगति को उद्घाटित करने में अत्यंत सक्षम हैं। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने गोदान में पूँजीवादी सभ्यता साये पनपने वाली साहूकारी प्रवृत्ति पर करारा चोट किया है। चुटकुलानुमा व्यंग्य दृष्टव्य है –

'' यह तो पॉच ही है मालिक ।

'' पॉच नहीं दस हैं, घर जाकर गिनना।'

'' एक रूपया नजराने का हुआ कि नहीं ...एक तहरीर का? ...

'' एक कागद का? एक दस्तूरी का? एक सूद का? पॉच नगद, दस हुए कि नहीं?

'' हॉ सरकार अब पॉचों भी मेरी ओर से रख लीजिए। 12

''कैसा पागल है?

''नहीं सरकार, एक रूपया छोटी ठकुराइन का नजराना है, एक रूपया बड़ी ठकुराइन का । एक रूपया छोटी ठकुराइन के पान खाने को , एक रूपया बड़ी ठकुराइन के पान खाने को।बाकी बचा एक, वह आपकी क्रिया करम के लिए।''

''सभ्यता के धरातल के विकसित अयामों के साथ हमारे साहित्य का एप्रोच जैसे ही बुद्धि के धरातल की ओर प्रस्तुत हुआ है वैसे ही हमारी अभिव्यक्ति में तो अंतर आया ही है, साथ ही साथ उस अभिव्यक्ति के कारण विषय वस्तु के परिवेश भी पर्याप्त परिवर्तित हुए हैं। '' 13

हिन्दी साहित्य के स्वातंत्र्योत्तर काल में जहॉ तक परिहास या साहित्यिक चुटकुलों की स्थिति है, निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि वह साहित्यिक स्तर पर गृहीत विषय वस्तु की ओर अग्रसर हुआ है। उदाहरणार्थ प्रस्तुत है –

''भवानी प्रसाद मिश्र जी से कविता पढ़ने को कहा गया तो बोले, 'भई हम कविता नहीं पढ़ सकेंगे। थोड़ी देर बाद फिर अनुरोध किया गया, फिर वही उत्तर। जनता की आवाज सुनाई ई, 'मिश्र जी वांटेड– मिश्र जी वांटेड।' ''मिश्र उठे, माइक पकड़कर बोले, देखिए मैं आज कविता नहीं पढ़ पाऊॅगा।'

''मंच पर बैठे परसाई जी ने आश्वासन दिया, 'कोई बात नहीं, कविता आप पढ़ दीजिए, ऑखें हम मटका देंगे।''14

उपरोक्त उद्धरण पर हम विचार करें तो इस निष्कर्ष पर पहुॅचते है कि अंतिम स्थिति विस्फोटन के साथ तिक्त परिहास श्रोताओं पर गहरा प्रभाव डालता है।

साहित्यकारों के मध्य हुए चुटकुलात्मक संवाद का एक और उदाहरण देखिए –

''किसी बात पर मोहन राकेश और राजेन्द्र यादव में साहित्यिक विवाद छिड़ गया। जब बहस में तीखापन आने लगा तो कमलेश्वर राजेन्द्र यादव का जरा अलग ले गए, बोले, ' मामूली सी बात पर घंटे भर से क्यों दिमाग खपा रहे हो यार, आखिर तुम क्या चाहते हो ?' ....'अगर वह साहित्य के मामले में ऐसे ही उटपटांग बात करता रहा तो एक दिन साहित्य से उसका नामोंनिशां मिट जाएगा। .....और मैं तो कहता हूॅ कि वह दिन जल्दी आए।राजेन्द्र यादव झंझलाये स्वर में कहा।

'' ' तो तुम चाहते हो कि राकेश का नाम साहित्य से मिट जाएॅ?

'' हॉ , चाहता हूॅ ।

''तो तुम्हें भी थोड़ा त्याग करना पड़ेगा।'

''हॉ करूॅगा बताओ।

'' 'तो फिर चार– पॉच महीने तक तुम जो कुछ लिखो, वह सब राकेश के नाम से छपवा दो।''15

इसी तरह का यह एक और संवाद प्रस्तुत है –

''ग्यारह सपनों का देश 'जैसा सहयोगी उपन्यास लिख चुके डॉ धर्मवीर भारती से मोहन राकेश ने कहा, ''आइए हम दोनों मिलकर एक सहयोगी उपन्यास लिखें।''

डॉ. भारती ने मना करते हुए कहा,'' गधे का साथ क्या कभी घोड़े से होता है।''

मेहन राकेश ने इस पर कहा, ''ठीक है।अगर तुम नहीं चाहते हो तो कोई बात नहीं। पर यह बताओ तुमने मुझे घोड़ा क्यों बना दिया!'' 16

राजनीति और प्रशासनिक ढॉचे मे फैल लूट खसोट और अव्यवहारिकता जनित विडम्बनाओं को इस काल के साहित्यिक चुटकुलोंबाजों ने अपनी पैनी कलम से उकरकर जनचेतना हेतु स्तुत्य कार्य किए हैं ।

तत्संबंधी उदाहरण दृष्टव्य है–

''हमारे देश में सबसे अधिक मौलिक बात बात कहने वालों में उच्चाधिकारियों और उच्चवर्गीय नेताओं का प्रमुख स्थान हैं। .....उच्चाधिकारी ने कहा – ' भाइयों , आज आपके सामने खेती के संबंध में क्रांतिकारी विचार रखना चाहता हूॅ। जाने क्यों बदलते हुए समय के साथ भी हम खेती के पुराने तौर –तरीकों से चिपटे हुए हैं। मैं

चाहता हूँ हमें खेती के औजार ही नहीं, बोये जाने वाले बीजों तक में आमूल परिवर्तन करने चाहिए। आप लोग जो यह तुअर बोते हैं, इसके बजाए यदि 'तुअर की दाल' बोया करें तो देश की कितनी सारी पिसाई बच सकती है। ' कहते हैं कि उनकी इस बात को सुनकर मातहत कर्मचारियों ने तो प्रशंसा की, लेकिन बिना पढ़े किसानों ने उसे हँसी में उड़ा दिया। ''17

यह भी अवलोकनीय है–

''तीसरे दिन ....शिक्षामंत्री भाषण कर रहे थे– विद्यार्थी देश के भावी कर्णधार हैं..... एक ही पुस्तक से विद्यार्थी ज्ञानार्जन नहीं कर सकता ....अतएव पुस्तकों की संख्या में कटौती करने का प्रश्न अटपटा है....अलबत्ता गधों के निवास की व्यवस्था स्कूल व कालेजों में की जा सकती है।''18

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य में चुटकुलों का विपुल प्रयोग जीवन मूल्यों की प्रतिस्थापन एवं मूल्य विरोधों तत्वों का शमन करने के साथ साथ विशुद्ध मनोरंजन के लिए सफलता पूर्वक निरूपण हुआ है।

संदर्भ सूची –

1 सदी का व्यंग्य विमर्श : पृष्ठ 16
2 – वही
3 वही पृष्ठ 54
4 वही पृष्ठ 78
5 वही पृष्ठ 79
6 वही पृष्ठ 80
7 वही पृष्ठ 81
8 वही पृष्ठ 82
9 वही पृष्ठ 83
10 वही पृष्ठ 83
11 वही पृष्ठ 84
12 वही पृष्ठ 96
13वही पृष्ठ 167
14 वही पृष्ठ 168
15वही पृष्ठ 170
16 खुशकलामियॉ,नया ज्ञानोदय दिसंबर 2015/111
17सदी का व्यंग्य विमर्श :मलयः शिल्पायन प्रकाशन पृ. 179
18 वही पृ.185